अब नया सूरज उगाना चाहिए

- डॉ. सुशील गुरू

नेह की पाती मिली, ज्यों दीप की बाती जली
हाशिये पर उभर आये पोर, पीठ पर उभरी हथेली।
आपके बोलों में ऑखियॉ बोलती हैं,
घोल मिश्री के अनवरत बोलतीं हैं।
नेह का यह मेघ धरती पर बरसना चाहिए।
आपका हर शब्द एक झंकार लेकर
जलधि से बहती नदी का प्यार लेकर,
ज्वार भाटों की तरह मन पर उतरना चाहिए।
प्रीति का विरवा सजीला हो गया है,
अब नया सूरज उगाना चाहिए।

नेह के अनुबन्ध खूशबू से भरे काग़ज़ पै उतरे,
ज्यों गगन से बादलों पर चॉदनी के पुष्प बिखरे। आपका तन ज्यों
गुलाबी बादलों का एक दौना,
आपका मर स्वप्न तिरता एक सलोना,
गगन पर सॅवरे स्वयंवर में उतरना चाहिए।
आपको मेंहदी हथेली पर सजाकर,
हथेली पर आस का दीपक जलाकर,
ज्योति का प्रस्ताव अंगीकार करना चाहिए।
देहरी का दीप चमकीला हुआ है,
अब नया सूरज उगाना चाहिए।

नयन के प्रतिबिम्ब बिम्बों ने गुलाबी पंख खोले,
शब्द बोले कल्पना ने इन्द्रधनुषी रेग घोले।
आप ही से यह गुलाबी हैं हवायें,
फूल के होठों पर कवितायें सजायें।
हर कली में एक नया सूरज संवरना चाहिए।
आपको उपमा नहीं उपमान लेकर,
नयन में उभरे नये दिनमान लेकर,

स्वर्ण संध्या का ऊषा में उभरना चाहिए।
शब्द का हर अर्थ मेंहदीला हुआ है,
अब नया सूरज उगाना चाहिए।

डॉ. सुशील गुरू,
५३/बी इन्द्रपुरी, भोपाल-२१
मो. ९४२५०२५४३०